

विष्णु
म. चातुर्वर्ग. शासक. अ. १ प्र. १८. म. १८. १८. १८. १८.

म. चातुर्वर्ग.
जन्म.
कथनावीय.
वाधा वेनक.

शाखा नमः	
225	

ASTA 100000

मन्त्राजुर्वेदके

ॐ नमो श्री वज्रसत्वाय नमः॥ ॥ स वाक्व्यनक॥ विधि॥ नक
 संपूजा तत्र दयक शृंगजा गतश्वनजी ज्वरनि लाज नशु जं नय
 पाता॥ ॐ का॥ यका॥ जजं॥ धत॥ साषा॥ धत कसि॥ ॐ गलसि
 हत॥ विधिकर्म मालक दयक॥ ॥ नक संधा पनायाया॥
 कल संधा म नष च गव्य पाउ दिदिवति॥ दिगुति सम
 व ~~ध~~ पापिद्वथ निष्ठा पनायाया॥ ॥ त्रिनास्यंगुत्र मधुत्र
 याया॥ पक्व गव्ये ~~ध~~ धन॥ पक्व गव्ये विया॥ स धृत नय म
 धृत पित्त कि नत लख वति विसर्जनि॥ समाधियाया॥ कल

मनश्चापि पूजा ॥ दंडा पूजा ॥ दिदिव तिविय ॥ ॥ धनभा
वात्र सस्यं हय ॥ स्वस्मिन् गस्या ॥ गुन स धुल दनक ॥ मन
पूजा याय ॥ विसर्ज नयाय ॥ धन मूचाया न हावना न
यवा क्क ॥ उं स्र वा व शुद्धा ह्यादि ॥ हाहा ग्निल उ ॥ व
ज नाचा मन हन नाय ॥ ॥ धन कल ठा रि ख क विय ॥
वाक ॥ उं स्र व क्क नल वल धर्म व डि मूद्रा गलन ॥ मसि न
स्य द्विपद स्य वला चन स्य एव दुःख विना सक स्य न म्भ
त एव नु सानिक वषा घं ॥ ॥ धन धन कस्मिन् गत सिस्त

सर्वो गया गुदिगगा सर्वो विदिगुदया नव ३ सूर्यया नवा १
सूर्याया नवा १ रथा काति नम चाया ननक ॥ वाक ॥ ॐ ॥ अ म
व न थाग नद्य नमध प्राक्षस्य नरु स्वाहा ॥ ॥ कं ठालरवन
नावायक ॥ ॐ ॥ स्वाहा ॥ ॥ स्व पति नयक स्व पालन नवा
यक ॥ ॥ धनकलवा ॥ न स्य कलखद्योयः ॥ ॥ धनजाकि
कल १ नस्य ॥ कथरव ला स वि कं न स्य ॥ कि ग्वलन न स्य द्वाय
कं विकन न नित्यक ॥ ॐ ॥ सर्व न थाग न काय वि सध न स्वाहा
धनमि वृत्त न स अंगुतिवान स्य दिगगी स्पंतडा फोय २

॥ॐ सर्वं सर्वं सुखं तस्मात् ॥ ॥ धनं कुं सा रि ख क विय
ॐ सर्वं न धा ग ग न त व त ध म्म व र्जि म्म ड ग ल न स रि न
दि प द स्य व लो च न स्य ए व द्ख वि नो स क स्य ग त्म ग लं ए
व तु म्म कि क लं वा यं ॥ धन प च र ग र्थ न ह या येः ना म द्य ये ॐ
आः व र्ज ती ल क भ्ख न स्वा हाः ॥ ॥ धन व ड जा स्य प क र ग ल
न गिय का ॐ अ म्म क ए व न धा ग ग ना म द्य र्ख स्य ॥ ॥ धन मि वृ
त न द द्वा सें ध ति स गं न विय ॥ ल न ह्ग न क ॥ मि हं स्त्र य ॥ व ड न
थि या ॐ स प्र गि ति त व र्ज स्वा हा ॥ धन वा क प ड जा गाय ॥

मधुलपिल॥ किं न ज्ञे॥ अस्मिन्निदं सद्यं कृता विन पञ्चा॥ द
कृता पञ्चा॥ विन न तिर क॥ दि गुप्त मय द्याय॥ दि दि वलि द्याय॥
दि गुप्त मय काय॥ समयाचक॥ गन चक॥ कल द्याय॥ मा सि
ष्टीय॥ स्वा का काय॥ ॥ ॐ ति जा न कर्म विधि स मा फः॥
॥ ०॥ ॥ ॐ ॥ उन मा ऋ वज स स्वाय॥ ॥ ॐ न हल प्रा सन विधि
कर्म विधि (थं या त सा॥ फु प ख न॥ सष य लु सि धान॥
द्याय ना र लियाया॥ कर्म स मा त द्धे॥ ॥ सति ख द्ध॥ ज पो पि
षाल पद काय॥ पञ्चा ए ल श द य क न डा क्क था त ल सा॥ न डा

कं ध्यायस्व ध्यायनायाया ॥ कं न सद्यः मयपक्वगव्यपात्रा ॥ सि
द्यतिनकं पुडागिसातुकुमासि दुब्बादिदिवलि उपंताय ॥ ध्यापि
शुदिगुति सङ्कचं शु ॥ कमा लित्या ॥ षायदद्याथा पिसम्व
दद्याथगिष्ठयनायाय ॥ ॥ धनसूर्या ॥ अदियाय ॥ पक्वगव्य
राधन ॥ पक्वगव्यविय ॥ सिधल नय ॥ ॥ मधुपि स ॥
समाधि गाय ॥ महति हय ॥ ॥ धनसद्य मंग कं न
ओका धा सतपजायाया था विंपजा ॥ दडापजा ॥ कोमा
तिपजायाय ॥ ॥ दिदिवलिविय ॥ ॥ धनसमवातसास्य
सासि सतस्य शुल मधु सदनके ॥ म नपजायाय ॥ विमर्जनयायक

॥ ॥ अतः प्रयायात स्नानं वृद्धं लुगं स्पृष्टं वा वत ॥ वाक्का ॥ उच्यते ॥
ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॥ ॥ कथं मिलेताव जगताम गच्छेत् ॥ चक्रं
यविय ॥ ॥ अतः कसलं पतनं हाय ॥ उच्यते ॥ वज्रं न उच्यते ॥ ज्ञानं
जपानि स मरिचिना च सहितं स्यात् ॥ अमाद्यं सिद्धिं ज्ञानं गतं हि न
कत्र पत्रं मा ॥ ५ ॥ सिद्धिं गतं गतं एव उच्यते ॥ कत्र वाद्यं ॥ ॥ अतः
गतास्यं गता ॥ एतं उच्यते ॥ स्वस्ति वाक्क पतय ॥ ॥ अतः
उपायं दिगतास्यं विय ॥ उच्यते ॥ वाक्क पतय ॥ ॥ दिगतास्यं
पतनं हि क ॥ उच्यते ॥ वाक्क पतय ॥ ॥ अतः सिद्धिं
माद्यं नयाय ॥ उच्यते ॥ सर्वं संधनियं स्यात् ॥ ॥ दिगतास्यं वाद्यं ॥

ॐ षुदव ता ॥ वसु सूर्य याग याय ॥ ॥ धनमवायातनकं ॥ वाकं ॥
उज्ज ॥ समाधि हलुजिनयप्रनिनस्याहा ॥ ममसिनकं ॥ उज्ज
खाहानकानकं ॥ उसवयिषुकायस्याहा ॥ वाकमदिनकं ॥
मिपतिमा मयागलडाहाय ॥ ॥ धनजनकोक्रियायाय ॥
-- नकुठालखनहाया ॥ वाकं ॥ उज्जमगतं त्यादि ॥ ॥ धनव
सुय -- -- -- यकं ॥ उवाडेंगधुनकवास्यस्याहा ॥ ॥ नानाए
वनंति -- -- -- ॥ उमवावनेखनस्याहा ॥ ॥ धनएजाहा
धनयाय ॥ उनमासर्ववधानां डाजोवतंददमस्याहा ॥ धाहा
आशहाय ॥ ॐ षुदव ता वंदु सूर्य याग ॥ ॥ नावायका ॥ उज्ज

५ स्वाहा॥ ॥ धैलसापतनि शसक गां नकें॥ ॥ ६ प्रा नाय स्वाहा॥
नाचायक॥ अंगुलीनेक॥ ७ ज प्रा नाय स्वाहा॥ नाचायक॥ ८ पतान
क॥ ९ समानाय स्वाहा॥ नाचायक॥ चालानक॥ १० धा नाय स्वाहा॥
नाचायक॥ विलानक॥ व्यानाय नमः स्वाहा॥ नाचायक॥ मूलान
शपयितेका स्पनक॥ ११ दिव्या नाय समाना विधानपित्रन
स्वाहा॥ नकशायानावातासंगय॥ नाचायक॥ १२ अचमनप्रति
वृत्तस्वाहा॥ ॥ यातासकलेशा॥ तस्य कल द्वाय॥ पतनास्वलागय॥
स्नानमा लातकाषायक॥ १३ कृकारानकाषायक॥ सिंहनस्य॥ ५
वजनधिय॥ ॥ गवयग्वस्तविया॥ ॥ पतवाकपडायाय॥ मधुव

[illegible]

६

लिवायगुत्रमधुलयाय॥पंचगव्यस्वधन॥पक्वगव्यविया॥
 सिक्कगया॥मधुलपिसा॥किन्नलषवसिहोय॥शिशुमाधियाया॥
 कुंजसध्वंमगपूजा॥अग्निष्पुपनयाय॥अन्नहृतिखाय॥था
 पिपूजा॥दंडोष्णायाय॥दवगाहृतियाय॥॥धनमवात
 स्वस्यंहुयडास्वस्तिवाकसुवस्यगुत्रमधुलदनकमगपूजाया
 य॥निसर्जुनयाय॥पक्वगव्यविया॥रावनावय॥स्वस्तिवाकप
 दया॥॥निलाजनवजगावामगहगाय॥॥धनलिविवायमडा
 कल॥गया॥मलिषसयिकेगया॥थाकालिनदिगगास्यंमया
 यागलडाकय॥॥थाकालिनकिंनंगलयाजोनकंसास्यह

३

आ० लाहा मास मास कव कं॥ धननापिकयागहाषजायाय
हादुना १२५५॥ नृकुलडाहायालडाहाय॥ सखाया॥ त्रि
धनककत्रिकत्र सायक॥ अ० वहामलनमोलकुयका॥ कुंठ
लेखनमोलवायक॥ अ० डा० रथासंगय॥ प० क० ग० वि० य॥ ॥
धनमवागधनाडा लूषविकमसूकादुरं डीया॥ यातकयगायू
५०॥ लकयगावि० य॥ वा० क॥ ड० व० ड० सं० धि० व० स्वाहाकयगानवि० क॥
॥ नानाए ननरि० य० क॥ ड० स० व० वि० न० ए० ख० न० स्वाहा॥ ॥ मि० क० सा० न
ल० ड० हा० य॥ ड० हा० स्वाहा॥ ॥ लि० डा० वि० रु० डा० वि० मि० वा० ल० ड० हा० य॥
ड० व० ड० ए० ष० ल० डा० स्वाहा॥ ॥ हा० मि० रु० गा० वि० य॥ ड० व० ड० न० ल० ड० ॥ ॥

